सुभाषचन्द्र बोस (संकलित)

''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा ''

पाठ–परिचय

प्रस्तुत पाठ भारतीय स्वाधीनता संग्राम के नायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की जीवनी पर आधारित है।

नेताजी ने भारत की आजादी के लिए जिस प्रकार के त्याग एवं कष्टपूर्ण जीवन को जीया वह प्रत्येक देशवासी के लिए श्रद्धा का विषय है। पाठ में नेताजी के बचपन से लेकर जीवनपर्यन्त कार्यों व घटनाओं की जानकारी प्रस्तुत की गई है –

****

सिंगापुर के टाउन हाल के सामने आजाद हिन्द सेना की परेड़ को सम्बोधित करते हुये जिस वीर सेनापति ने भारत की आजाद हिन्द सेना को सम्बोधित किया उनका नाम है सुभाषचन्द्र बोस। भारत की आजादी की लड़ाई में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का नाम सोने के अक्षरों में अंकित रहेगा। हमारे लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि नेताजी किन परिस्थितियों में जन्मे और भारत की आजादी के लिए संघर्ष करते हुए आगे बढ़े।

उड़ीसा के कटक नगर में 23 जनवरी 1897 को श्री सुभाषचन्द्र बोस का जन्म हुआ। उनके पिता श्री जानकी नाथ बोस कटक के बड़े ही प्रतिष्ठित वकील थे। वैसे वे 24 परगना के कोदलिया ग्राम के रहने वाले थे परन्तु वकालत करने के लिए कटक नगर मे जाकर बस गये थे। सुभाषचन्द्र बोस की माँ श्रीमती प्रभावती एक धार्मिक महिला थीं। वे श्री रामकृष्ण परमहंस की भक्त थीं। अपने बचपन का जिक्र करते हुए सुभाष बाबू ने स्वयं लिखा, हमारा घर बहुत धनवान नहीं था लेकिन अच्छा खाता पीता उच्च मध्यम श्रेणी का परिवार था। मुझे गरीबी और अभाव का तब तक कोई अनुभव नहीं था, न मुझमें स्वार्थ लालच और आलस्य की आदत थी। हमारे घर में फिजूल खर्ची नहीं थी। एक बड़े परिवार में जन्म लेने के कारण कई दुख होते हैं। बच्चे को जितना माँ बाप का ध्यान, प्यार और निर्देश मिलने चाहि, वह सम्भव नहीं हो पाते हैं, इससे व्यक्तित्व के विकास में बाधा आती है। हमारे घर में हमारे आश्रितों की संख्या भी काफी थी। हम अपने नौकरों की भी इज्जत करते थे।''

5 वर्ष की उम्र में जनवरी 1902 में सुभाष बाबू को स्कूल में भर्ती करवाया गया। वे इससे बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि भाई बहनों का बराबर स्कूल जाना और उनका पीछे छूट जाना उन्हें खटकता था लेकिन पहले ही दिन एक दुर्घटना हो गई और सुभाष बाबू को 24 घंटे आराम करना पड़ा।

यह स्कूल एंग्लो इंडियन लोगों का था जिसके प्रधानाध्यापक और प्रधानाध्यापिका मिस्टर एंड मिसेज यंग थे। सुभाष बाबू ने उस स्कूल के प्रारम्भिक संस्मरण लिखते हुए कहा है कि श्रीमती यंग का वे

बहुत आदर करते थे। श्री यंग बहुत कठोर थे। वहाँ पर एक मिस एस थी जिससे उनके सभी सहपाठी और वह स्वयं घृणा करते थे। इस स्कूल में एंग्लो इंडियन और भारतीय बच्चों के बीच भेदभाव बरता जाता था। इस भेदभाव के सम्बन्ध में बताते हुए सुभाष बाबू ने लिखा है ''उस स्कूल में छात्रवृत्ति के लिए भारतीय बच्चों को प्रार्थना–पत्र देने का कोई अधिकार नहीं था। यद्यपि हममें से बहुत सारे लोग अपनी कक्षाओं में सर्वप्रथम आते थे। इसी प्रकार एंग्लो इंडियन बच्चे स्वयं सेवक दल में भरती हो सकते थे और अपने कंधों पर बंदूक रख कर अभ्यास के लिए जाते थे। भारतीय बच्चों और एंग्लों इंडियन बच्चों में अक्सर झगड़ा होता रहता था।''

1908 तक सुभाष बाबू इसी स्कूल में रहे। जब कलकत्ता विश्वविद्यालय में बंगला भाषा मैट्रिक, इन्टर और बी.ए. के लिए अनिवार्य कर दी गई तो सुभाष बाबू को भारतीय स्कूल में भर्ती कराना अनिवार्य हो गया। वे अपनी कक्षा में सर्वप्रथम आते थे। सुभाष बाबू ने अपनी आत्मकथा में उस स्कूल के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है, ''यदि आज मुझे कोई कहे कि कोई भारतीय अपने बच्चे को उस स्कूल में पढने के लिए भेजे तो मैं उसे एंग्लो इंडियन स्कूल में भेजने से मना करूँगा।''

राबिन शा कालेजियट स्कूल कटक में सुभाष बाबू ने पढ़ाई शुरू की। उनको अपनी मातृ भाषा बिल्कुल भी नहीं आती थी। उन्हें सबसे पहले बंगला भाषा में गाय या घोड़े पर एक लेख लिखना पड़ा। उसकी भाषा बहुत गलत थी अतः अध्यापक ने उनके निबन्ध की मजाक उड़ाते हुए पूरी कक्षा में सुनाया उससे उन्हें बहुत नीचा देखना पड़ा। इस चोट से प्रभावित होकर उन्होंने बंगला भाषा का इतना अध्ययन किया कि वे वार्षिक परीक्षा में बंगला भाषा में सर्वश्रेष्ठ अंक लेकर उत्तीर्ण हुए ।

परिवार में खेलने– कूदने की अधिक इजाजत नहीं थी। अतः घर में बैठ कर संस्कृत के नीति श्लोक याद करने का उन्हें बहुत शौक था। वे बागवानी भी करते थे। अपने इन दिनों का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा है, ''मुझे लगता है कि मैं बहुत छुटपन में बहुत गम्भीर हो गया हूँ।''

इस स्कूल के प्रधानाध्यापक बाबू बेनीमाधव दास ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। उन्हें सदा ऐसा लगता था कि बाबू बेनीमाधव दास के चेहरे पर वही भावाभिव्यक्ति है जैसी कि आचार्य केशवचंद्र सेन के मुख पर थी। बाबू बेनीमाधव दास से पढने के वर्ष में ही उनका अन्य जगह स्थानान्तरण हो गया। उनकी विदाई के दिन उनके शिष्य सुभाष बाबू की आँखें भर आईं।

उन्हीं दिनों में उनके पड़ोस में उनके एक निकट रिश्तेदार आकर बसे। अचानक सुभाष बाबू उनके घर गये और यहीं पर उन्होंने सबसे पहले स्वामी विवेकानन्द द्वारा रचित पुस्तकों को देखना शुरू किया। स्वामी विवेकानन्द के इस कथन ने उनको बहुत सहारा दिया, ''अपने मोक्ष के लिए संसार का हित कीजिए।''

स्वामी विवेकानन्द के साहित्य को पढ़ने से उनके मन में जो नैतिक असमंजस था वह समाप्त हो गया। स्वयं सुभाष बाबू ने अपनी मनःस्थिति का वर्णन करते हुए कहा है ''मेरे मन में दो प्रकार के संशय थे एक – सांसारिक जीवन की ओर मेरे में आकर्षण आता था लेकिन मेरी आत्मा उसके विरूद्ध विद्रोह करती थी एवं दूसरा मेरे मन में भोग की चेतना पैदा होने लगी जो कि प्राकृतिक थी लेकिन मेरी आत्मा उसे अनैतिक मानती थी। इस समय में मेरे मन को दिशा देने का काम स्वामी विवेकानन्द के साहित्य ने किया। मातृभूमि की सेवा का पहला मंत्र मुझे स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्राप्त हुआ।

सुभाष बाबू ने लिखा है, ''स्वामी विवेकानन्द के साहित्य को पढकर मैं अनके गुरू श्री रामकृष्ण परमहंस देव के प्रति आकृष्ट हुआ और उनके विचारों ने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला कि जब तक वासना और लोभ दोनों को मनुष्य नहीं छोड़ता तब तक वह आध्यात्मिक जीवन के लि, उपयुक्त पात्र नहीं बनता। मेरे जैसे और भी कई विद्यार्थी श्री रामकृष्ण परमहंस देव और स्वामी विवेकानन्द के साहित्य से प्रभावित हुए। हमारा एक पूरा दल बन गया था।

मेरे माता–पिता ने इस बात को देखा कि मुझमें आध्यात्मिक विचार बढ़ रहे हैं और अपने दोस्तों के साथ में अध्ययन की बजाय उधर मुड़ रहा हूँ तब मुझे उन्होंने बहुत डाँटा लेकिन मैंने उनके प्रति भी विद्रोह कर दिया। स्वामी विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित होकर मैंने सामाजिक और पारिवारिक जीवन के प्रति भी विद्रोह कर दिया। हम लोग ब्रह्मचर्य, योग इत्यादि की पुस्तकें पढ़ने लगे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस देव ने यह भी कहा है कि ध्यान एकांत में किया जाता है। सुभाष बाबू ने लिखा ''एक बार कमरे में बैठकर ध्यान लगाया। कमरे में अंधेरा था तो हमारे घर की एक बूढ़ी नौकरानी अन्दर आई और अंधेरे में मुझे बिना देखे मुझसे टकरा गई तब मेरा ध्यान भंग हुआ।''

उन्हीं दिनों में एक संन्यासी कटक में आये। उन्होंने तीन बातें बताईं। 1. निरामिष भोजन 2. नियमित मंत्रपाठ और 3. नियमित माता–पिता के चरण स्पर्श। मैंने कई दिनों तक इन तीनों का कठोरता से पालन किया। मेरे सभी घरवालों को इस पर आश्चर्य हुआ मुझे जब इसमें किसी प्रकार का कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं हुआ तो मैंने इन संकल्पों को छोड़ दिया और पुनः श्री रामकृष्ण परमहंस देव और स्वामी विवेकानन्द के विचारों में खो गया।

उनके घर में बालक कभी–कभी राष्ट्रीय महापुरूषों के चित्र अखबारों से काटकर दिवारों पर लगा देते थे। एक बार एक रिश्तेदार के साथ एक पुलिस अधिकारी उनके घर आया और उन्होंने उनके पिताजी से कहकर वे तस्वीरें दीवार पर से उतरवा दीं।

सन् 1911 तक राजनैतिक दृष्टि से नेताजी विकसित नहीं थे। 1911 में जार्ज पंचम के राज्याभिषेक के सम्बन्ध में एक निबन्ध प्रतियोगिता में सुभाषचन्द्र शामिल हुए। सन् 1912 में कटक में उनके स्कूल में एक विद्यार्थी आया जिनसे बाबू बेनीमाधव दास ने छात्रों को परिचित कराया। उस छात्र ने ही सबसे पहले यह बताया कि राष्ट्र के प्रति भारतीय लोग कर्त्तव्य का निर्वाह कैसे करें।

बचपन से भूत प्रेतों की कहानियों से पैदा हुये डर पर विजय पाने के लिए योग और ध्यान की लगन ने सुभाष बाबू की बहुत मदद की।

सुभाष बाबू के मोहल्ले और घर में छोटी जातियों के लोग और मुसलमान रहते थे। उनसे किसी प्रकार का परहेज सुभाष बाबू नहीं करते थे। एक बार एक छोटी जाति के व्यक्ति ने उनके घर वालों को खाने पर बुलाया सभी ने न जाना तय किया लेकिन सुभाष बाबू ने अपने माता–पिता की आज्ञा तोड़कर उनके यहाँ जाकर खाना खाया। 1913 में मैट्रिक की परीक्षा में सारे विश्वविद्यालय में सुभाष बाबू प्रथम श्रेणी में द्वितीय रहे।

उसके बाद उन्होंने कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में अध्ययन शुरू किया। कॉलेज के प्रारम्भिक दो वर्षों में वे एक ऐसे समूह के साथ रहते थे जिन पर श्री रामकृष्ण परमहंस देव और स्वामी विवेकानन्द के

विचारों का प्रभाव था और ये लोग सामाजिक सेवा करते थे। यह दल आतंकवादियों की कार्यवाहियों के विरूद्ध था। इन्हीं दिनों में श्री अरविन्द घोष का प्रभाव सुभाष बाबू पर पड़ा। अरविन्द घोष उस समय भारतीय जनजीवन के महान नेता थे। वे राजनेता के साथ–साथ रहस्यवादी परमयोगी भी थे। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, अरविंद घोष से भिन्न व्यक्तित्व के व्यक्ति थे लेकिन अरविन्द के विचारों का प्रभाव सुभाष बाबू पर बहुत पड़ा। विशेष तौर से अरविंद के इस भाषण का ''मैं चाहता हूँ कि आप में से कुछ लोग बड़े बनें, बड़े बनें अपने लिए नहीं लेकिन भारत को महान बनाने के लिए ताकि दुनिया के राष्ट्रों में भारत सिर ऊँचा करके खड़ा रह सके। मैं चाहता हूँ कि आप में से जो गरीब और अकेले है उनकी गरीबी और उनका अकेलापन भारत माता की सेवा में समर्पित हो जाएँ । हम लोग काम करें ताकि भारत समृद्धशाली हो। हम लोग दुख झेलें ताकि भारत सुखी हो सके।''

प्रेसीडेंसी कॉलेज में पढ़ते समय एक बार 1914 के ग्रीष्म अवकाश में वे सम्पूर्ण उत्तर भारत के तीर्थों की ओर घूमने निकल गये। उस समय विश्वयुद्ध छिड़ गया।

जिन दिनों सुभाष बाबू प्रेसीडेंसी कॉलेज में पढ़ते थे उन दिनों छोटी–छोटी कहानियों के रूप में यह बातें प्रचलित हो गईं थीं कि अब अंग्रेजों ने किस भारतीय का अपमान किया और कब किस–किस भारतीय को अंग्रेजो ने रेल के डिब्बे से उतार दिया। कटक के दिनों में उनके चाचा को भी अंग्रेजों ने रेल के डिब्बे से उतार दिया था। अतः सुभाष बाबू को इन कहानियों पर कभी अविश्वास नहीं होता था। उनके मन में यह बात प्रभाव डाल रही थी कि अंग्रेज केवल शक्ति की भाषा समझते हैं।

1914 में संसार से विराग लेने का विचार सुभाष बाबू ने छोड़ दिया। 1915 में इन्टर परीक्षा में सुभाष बाबू प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए लेकिन वे सर्वप्रथम नहीं आ सके, इसका उन्हें दुख था। सुभाष बाबू ने दर्शनशास्त्र में ऑनर्स का अध्ययन प्रारम्भ किया लेकिन 1916 की जनवरी में एक दुर्घटना हो गई। एक अंग्रेज अध्यापक श्रीमान् ओ ने किसी छात्र को शारीरिक दृष्टि से क्षति पहुंचाई, वहीं पर छात्रों ने उनका विरोध किया। कॉलेज में हड़ताल हुई। प्रिंसिपल ने जुर्माना किया लेकिन छात्र नहीं माने। आखिर श्री ओ के सम्मान और छात्रों के सम्मान के अनुरूप एक समझौता हुआ लेकिन प्रिंसिपल ने बाद में जुर्माना माफ नहीं किया। छात्रों ने इसके बाद एक बार पुनः यह सुना कि श्री ओ ने किसी अन्य विद्यार्थी को भी पीट दिया। इस पर छात्रों ने विद्रोह कर दिया और एक बार सीढियों के सामने श्री ओ को पीटा। यह सब सुभाष बाबू के सामने हो गया। इसके बाद प्रिंसिपल ने सुभाष बाबू को कॉलेज से निकाल दिया। सर आशुतोष मुखर्जी कलकत्ता उच्च न्यायालय के जज भी थे और जो कुलपति भी थे, की कमेटी ने सुभाष बाबू और अन्य विद्यार्थियों के विरूद्ध प्रतिवेदन दिया, अतः उन्हें विश्वविद्यालय की परीक्षा में नहीं बैठने दिया गया और उन्हें प्रेसीडेंसी कॉलेज से निकाल दिया गया।

वे कटक लौट आए। कटक में आकर उन्होंने हैजा पीड़ित लोगों की बड़ी सेवा की। उस समय की एक जनश्रुति है।

संसार में सभी तरह के लोग होते हैं। निर्धन बस्ती में रहने वाले कुछ लोगों ने ऐसा समझा कि ये अमीरों के बच्चे हमारी हँसी उड़ाने के लिए आते हैं। नगर के माने हुए गुण्डे हैदर के साथ मिलकर उन्होंने सुभाष सहित उन सेवादार बालकों का खुलकर विरोध किया और उनके सेवा कार्य में रूकावटें डालने लगे

परन्तु बालक सुभाष बचपन से ही गम्भीर थे। उन्होंने इन बातों की ओर बिल्कुल ध्यान न दिया और रोगियों की सेवा बराबर करते रहे।

इस रोग ने गुण्डे हैदर के घर को भी नहीं छोड़ा। वह दौड़ा–दौड़ा एक–एक डॉक्टर, वैद्य के पास गया परन्तु कोई न आया। वह थककर हाँफता–हाँफता अपने घर को लौटा तो क्या देखता है कि उन्हीं बालकों का दल, जिनका वह विरोध करता था, उस घर की सफाई में जुटा है। एक बालक रोगी का औषध दे रहा है, दूसरा उसकी सेवा में लगा हुआ है और तीसरा मीठी बातें सुनाकर उसका दिल बहला रहा है। उससे न रहा गया। वह एक कोने में बैठ दोनों घुटनों के बीच मुँह छिपा कर फूट–फूटकर रोने लगा।

दल के नेता सुभाष बाबू ने देखा तो अपने नरम–नरम हाथों को उसके सिर पर फेरने लगे। और उसे धैर्य बंधाते हुए बोले, ''भाई तुम्हारा घर गन्दा था, इसीलिए रोग ने घेर लिया। अब हम उसकी सफाई कर रहे हैं। एक दूसरे के दुख–सुख में काम आना तो मनुष्य का कर्त्तव्य है।''

हैदर खाँ ने उठकर उनके पाँव पकड़ लिए और बोला, '' नहीं, नहीं मेरा घर तो गन्दा था ही, मेरा मन उससे भी ज्यादा गंदा था। आपकी सेवा ने मेरी दोनों गन्दगियों को निकाल दिया है। मैं किस मुँह से आपका धन्यवाद करूँ। परमात्मा करे आपकी कीर्ति संसार के कोने–कोने में फैले।''

धीरे–धीरे नगर से हैजे का रोग दूर हो गया और लोगो ने सुख की साँस ली।

सुभाष बाबू ने सोचा कि एक सच्चे महात्मा के चरणों में बैठकर योगाभ्यास सीखना चाहिए। घर में रहकर ऐसे महात्मा का मिलना कठिन है। वे एक दिन बिना किसी को बताये घर से निकल पड़े। एक–एक तीर्थ स्थान पर गये। अनेक महात्माओं से मिले, पर सच्चा योगी न मिला। उन्होंने देखा कि सहस्रों साधु गाँजा, भाँग और दूसरे नशे में चूर रहकर जीवन की अमूल्य घड़ियों को व्यर्थ खो रहे हैं। यह देख उन्हें साधु जीवन से घृणा हो गई। वे छः मास के बाद घर लौट आये।

भूख प्यास सहते–सहते उनका शरीर दुर्बल हो गया था। घर पहुँचते ही वे बीमार पड़ गये। कई मास तक बिस्तर पर पड़े रहे। धीरे–धीरे स्वस्थ हुए।

एक वर्ष कटक में रहकर पुनः कलकत्ता पहुँचे और सेना में भर्ती होने का प्रयास किया। इन्हीं दिनों में 49वीं बंगाली रेजीमेंट की भर्ती शुरू हुई। लेकिन आँखों की वजह से सुभाष बाबू को मेडिकल टेस्ट में रद्द कर दिया गया। सुभाष बाबू इसके बाद स्काटिश चर्च कॉलेज के प्रिंसिपल श्री उर्कहार्ट से मिले। जुलाई 1917 में उन्होंने दर्शनशास्त्र में ऑनर्स का पुनः अध्ययन शुरू किया। उन्हीं दिनों में सुभाष बाबू प्रादेशिक सेना में भर्ती हो गये। सुभाष बाबू 1919 में बी.ए. ऑनर्स दर्शनशास्त्र में प्रथम श्रेणी में पास हो गये। इन्हीं दिनों में एक दिन उनके पिताजी ने उन्हें कलकत्ता में बुलाया और उनसे कहा कि आई.सी.एस. की परीक्षा देने के लिए वह शीघ्र ही इंग्लैण्ड रवाना हो जाएं । पहले तो वे कुछ सोच में पड़े और फिर तय कर लिया कि वे रवाना हो जाएगें।

जिस समय सुभाष बाबू ने भारत छोड़ा और आई.सी.एस. की परीक्षा के लिए केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन प्रारम्भ किया उसके पूर्व भारत में जलियाँवाला बाग काण्ड हो चुका था। आई.सी.एस. में सुभाष बाबू चौथे स्थान पर उत्तीर्ण हुए। सितम्बर 1920 में सुभाष बाबू आई.सी.एस में चुने गये। अप्रैल 1921 को सुभाष बाबू ने आई.सी.एस से स्तीफा दे दिया। आई.सी.एस. से स्तीफा देने के कारणों का उल्लेख करते हुए

सुभाष बाबू ने लिखा है—

''अब मुझे पक्का विश्वास हो गया है कि अगर मैं नौकरशाही का एक सदस्य न होकर सामान्य व्यक्ति बना रहूँ तो मैं अपने देश की सेवा अधिक अच्छी तरह से कर सकता हूँ। मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि ''सर्विस'' में रहते हुए भी कोई व्यक्ति कुछ हद तक अच्छे काम कर सकता है लेकिन नौकरशाही की जंजीरों से मुक्त होकर वह जितनी भलाई कर सकता है उतनी बन्धनग्रस्त होकर कदापि नहीं कर सकता।

एक विदेशी नौकरशाही की सेवा करने के सिद्धान्त से मैं समझौता नहीं कर सकता। इसके अलावा, सार्वजनिक सेवा के लिए अपने आपको तैयार करने की दिशा में पहला कदम है अपने सभी सांसारिक हितों का परित्याग और उस क्षेत्र से पीछे हटने के सभी रास्तों को खत्म कर देना तथा राष्ट्र सेवा में पूरी हार्दिकता से जुट जाना।''

अपने बड़े भाई और पिता को अपने विचारों से अवगत कराने के बाद आई.सी.एस. से त्याग पत्र देकर सुभाष स्वदेश लौट आये। उनके स्तीफे का महान नेता श्री देशबंधु चितरंजन दास ने बहुत स्वागत किया।

सन् 1921 में भारत में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार हो रहा था। सुभाष बाबू ने देशबंधु चितरंजन दास के साथ मिलकर बंगाल में इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। देशबंधु चितरंजन दास ने भारत आते ही सुभाष बाबू को नेशनल कॉलेज का प्रिंसिपल बना दिया था। सुभाष बाबू ने अंग्रेजों का विरोध करने के फलस्वरूप 1921 में ही 6 माह की सजा पायी। 1922 में बंगाल में भयंकर बाढ़ आयी। हजारों बेघरबार लोगों की सुभाष बाबू ने बहुत सेवा की। भारत सरकार ने उनकी सेवाओं की सराहना की। 1923 में कांग्रेस ने कौंसिल के चुनाव लड़ने का फैसला किया। कलकत्ता कार्पोरेशन में देशबंधु चितरंजन दास का बहुमत आया और वे मेयर बन गये। उन्होंने सुभाष बाबू को प्रमुख अधिकारी नियुक्त किया। सुभाष बाबू ने कलकत्ता नगर के जनजीवन में बहुत सुधार किया। 25 अक्तूबर 1924 को सरकार ने बंगाल आर्डिनैन्स पेश किया जिसमें यह प्रावधान रखा कि सरकार किसी भी व्यक्ति को जब चाहे बिना मुकदमा चलाए जेल में डाल सकती है। इस अध्यादेश के तहत सुभाष बाबू गिरफ्तार कर लिये गये लेकिन सुभाष बाबू 6 माह तक फिर भी कलकत्ता कार्पोरेशन के लिए कार्य करते रहे। इस समय आप अलीपुर जेल में वहाँ से बहरामपुर जेल में और फिर बर्मा की मांडले जेल में भेज दिए गये। मांडले जेल के दुखों का वर्णन करते हुए सुभाष ने लिखा

''एक कवि का कथन है कि मृत्यु का कोई मौसम नहीं होता — मेरे विचार से मांडले में भी धूल का कोई मौसम नहीं है, क्योंकि संसार के इस कोने में वर्षा ऋतु का तो कभी आगमन होता ही नहीं। मांडले में तो हर स्थान पर धूल ही धूल है। यहाँ तक कि वायु में धूल है, अतः सांस के साथ भी धूल फाँकनी होती है। भोजन में धूल है, अतः भोजन के साथ उसे खाना होता है। आपकी मेज पर, कुर्सी और बिस्तर पर धूल है, अतः आपको उसका कोमल स्पर्श करना ही पड़ता है। यहां धूल की आँधियाँ आती हैं और दूर दूर तक के पेड़ों और पहाड़ियों को ढक देती हैं। उस समय आप इसके पूर्ण सौन्दर्य के दर्शन कर सकते हैं। इस दृष्टि से हम इसे दूसरा परमेश्वर कह सकते हैं।

यह तो हम सबको ही विदित ही है कि लोकमान्य 6 वर्ष तक कारागार में रहे परन्तु मेरी यह पक्की

धारणा है कि कदाचित् ही हममें से कोई यह मानता है कि उन्होंने इस अवधि में कैसी–कैसी शारीरिक मानसिक यातनाएँ भोगी। मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि वे यहाँ अकेले रहे। यहाँ उनका कोई बुद्धिजीवी साथी भी न था। केवल इतना ही नहीं, बल्कि वे अन्य बन्दियों से मिल–जुल भी नहीं सकते थे। सांत्वना के लिए केवल पुस्तकों का ही उन्हें एकमात्र सहारा था अन्यथा उनका जीवन पूर्णरूपेण एकांकी था।

वह वार्ड, जिसमें कभी लोकमान्य रहे थे, आज भी विद्यमान है अन्तर केवल इतना है कि इसका बाहरी ढाँचा बदल दिया गया है। हमारे वार्ड की तरह ये वार्ड भी काष्ठ–स्तम्भ वलयों से निर्मित है, जहाँ ग्रीष्म काल में न ऊष्मा से बचाव है, न सूर्य की किरणों से। यहाँ पावस में वर्षा से, शीतकाल में ठण्ड से और वर्ष भर चलने वाली धूल भरी आँधियों से बचने का कोई सहारा नहीं है।''

जेल में सुभाष बाबू का स्वास्थ बिगड़ गया। उन्हें स्वीट्जरलैंड जाने की शर्त पर छोड़ना सरकार ने मंजूर किया लेकिन सुभाष बाबू ने मना कर दिया। उनकी रिहाई के लिए देश में चारों ओर से हड़तालें हुईं। अन्त में ब्रिटिश सरकार ने 16 मई 1927 को सुभाष बाबू को रिहा कर दिया। सुभाष बाबू का कलकत्ता में अभूतपूर्व स्वागत हुआ। 1928 की मई में सुभाष बाबू महात्मा गाँधी से मिलने गये। लेकिन वहाँ से निराश लौटे। इसी वर्ष कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में जी.ओ.सी बनाये गये और उन्होंने श्री मोतीलाल नेहरू का कलकत्ता पहुँचने पर भव्य स्वागत किया। 26 जनवरी 1930 को सुभाष बाबू कलकत्ता के मेयर चुने गये। लेकिन इसके पूर्व सन् 1925 में देशबंधु चितरंजन दास के स्वर्गवास के बाद सुभाष बाबू ने श्रीमती बसंती देवी को इस प्रकार पत्र लिखा –

''देशबंधु चले गए। सिद्धिदाता के उस वरद पुत्र ने विजय मुकुट पहनकर ही भारत के विशाल कर्मक्षेत्र से दिव्यलोक की यात्रा की। आज उन्होंने महान प्यार के द्वारा ही अमरत्व प्राप्त किया है। आज हमारे चारों ओर बाह्य संसार में अंधकार है, और हृदय में शून्यता है। जहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक अंधकार ही अंधकार है। अंधकार की प्राचीर में आलोक–किरण के प्रवेश के लिए तिलभर भी स्थान नहीं है।''

सन् 1930 जनवरी में नगर में जुलूस निकालने की मनाही थी लेकिन कलकत्ता में सुभाष बाबू ने जो जुलूस निकाला उस पर पुलिस ने लाठीचार्च किया जिसमें सुभाष बाबू घायल हो गये। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 9 माह के कारावास का दण्ड मिला। 3 अप्रैल 1930 को पुनः जेल में सुभाष बाबू पर लाठीचार्ज हुआ जिसमें वह घायल हो गये । वे कई दिनों तक बेहोश रहे । कलकत्ता में हाहाकार मच गया । भारत भर में जनता बिगड़ उठी ।4 अपैल 1931को गाँधी–इरविन समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत सुभाष बाबू जेल से मुक्त हुए लेकिन इसके पूर्व जेल में ही वे कलकत्ता कार्पोरेशन के मेयर बन गये थे । 1931 मेंसुभाष बाबू जब बम्बई में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक से लौट रहे थे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। यहाँ उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। उन्हें टी०बी० बताई गई। 8 मार्च 1933 को आस्ट्रिया के वियना नगर में आपको इलाज के लिए भेजा गया। उन्हीं दिनों श्री विट्ठलभाई पटेल वहीं पर थे जो कि भारतीय असेम्बली के प्रधान थे। विट्ठलभाई पटेल सुभाष बाबू के विचारों से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन के प्रचार के लिए एक लाख रूपये का ट्रस्ट स्थापित किया जिसके एक मात्र ट्रस्टी भी सुभाष बाबू

बनाये गये।

जुलाई माह में सुभाष बाबू प्राग गये। उन्हीं दिनों पिता श्री जानकी नाथ बहुत बीमार थे। सुभाष बाबू देश लौट पड़े पर कलकत्ता बंदरगाह पर उतरते ही उनको केवल घर जाने की इजाजत मिली जहाँ पर थोड़ी देर बाद उनके पिता का स्वर्गवास हो गया।

10 जनवरी 1934 को सुभाष बाबू इलाज के लिए पुनः वियना चले गये। इन्हीं दिनों रोम में इटली के नेता श्री मुसोलिनी से आपने भेंट की। फरवरी 1936 में आयरलैंड गए और वहाँ श्री डी० वेलरा से मिले।

अप्रैल 1936 में जैसे ही सुभाष बाबू वापिस भारत लौटे, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उनके समर्थन में पुनः देश में हड़तालें होने लगी। यर्वदा जेल में उनका स्वास्थ्य फिर बिगड़ने लगा। मार्च 1937 में सुभाष बाबू को फिर मुक्त कर दिया और तभी पुनः स्वास्थ्य लाभ के लिए वे यूरोप चले गए।

अगले वर्ष हरीपुर काँग्रेस के लिए सुभाष बाबू को अध्यक्ष चुना गया। यह काँग्रेस की स्थापना का 51वां वर्ष था। 51 बैलों की जोड़ी से जुते रथ में राष्ट्रपति श्री सुभाषचन्द्र बोस का जुलुस निकला। एक वर्ष तक उन्होंने बापू के साथ मिलकर काम करने का प्रयास किया। 1939 के काँग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष पद के लिए सुभाषचंद्र बोस और डॉ० पट्टाभि सीतारमैया में मुकाबला हुआ। महात्मा गाँधी ने डॉ० पट्टाभि का साथ दिया। लेकिन 20 जनवरी को सुभाष बाबू त्रिपुरा वाली काँग्रेस के पुनः राष्ट्रपति चुन लिए गए। जवाहर लाल नेहरू के अलावा सभी सदस्यों ने कांग्रेस कार्यकारिणी से स्तीफा दे दिया। 106 डिग्री बुखार होने पर भी सुभाष बाबू त्रिपुरा काँग्रेस में स्ट्रेचर पर लेटकर पहुँचे। काँग्रेस के अध्यक्ष सुभाषचन्द्र बोस और महात्मा गाँधी के बीच मतभेद के कारण सुभाष बाबू ने काँग्रेस अध्यक्ष पद से स्तीफा दे दिया।

इसके बाद सुभाष बाबू ने डलहौजी स्क्वायर कलकत्ता में ब्लॉक हॉल नामक स्मारक को हटाने के लिए आंदोलन किया। उनको 2 जुलाई 1940 को जेल में डाल दिया गया। नवम्बर 1940 को उन्होंने जेल में भूख हड़ताल शुरू कर दी। इस पर सुभाष बाबू को मुक्त कर दिया लेकिन उन्हें घर में नजरबन्द कर दिया गया।

15 जनवरी 1941 को सायंकाल एक मौलवी के वेश में सुभाष बाबू घर से निकल पड़े और अफगानिस्तान के रास्ते से मास्को होते हुए बर्लिन पहुँच गये। मास्को में आप स्टालिन से मिले और बर्लिन में आजाद हिन्द फौज का निर्माण किया। उसका पहला केन्द्र ड्रेसडन नगर में रहा। 20 जनवरी 1943 को नेताजी टोक्यो पहुँचे। यहाँ पर जापान के प्रधानमंत्री जनरल टोजो से मिले। यहीं पर जनरल प्रतापसिंह ने नेताजी के आने से पहले आजाद हिन्द सेना बना ली थी जिसके प्रधान श्री रासबिहारी बोस थे। अपने अलग–अलग भाषणों में सुभाष बाबू ने आजाद हिन्द फौज के विजय की कामना की।

''एक भारतीय के रूप में मैं सदैव हिन्दूस्तान की आजादी के लिए लड़ता रहा हूँ। मैं उम्मीद करता हूँ कि सारे भारतीयों को चाहे वे कहीं भी हों, भारत की मुक्ति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देना चाहिए। प्रत्येक भारतीय को साहस के साथ लड़ना चाहिए। भारत के प्रत्येक पुत्र को इस दृढ़ विश्वास के साथ लड़ना चाहिए कि हमारे पूर्वजों की धरती की मुक्ति का दिन निकट है।

जिस फौज की साहस, निडरता और अजेयता की परम्परा न हो वह ताकतवर दुश्मन पर हावी नहीं हो सकती।

सैनिक होने के नाते आपको निष्ठा, कर्त्तव्य और बलिदान के तीन आदर्शों को संजोये रखना होगा और उनका पालन करना होगा। जो सैनिक देशभक्त होते हैं वे प्राणोत्सर्ग के लिए सदा तत्पर रहते हैं और वे अजेय होते हैं। अगर आप भी अजेय होना चाहते हैं तो इन तीन आदर्शों को हृदय के अन्दर अंकित कर लें।

आज आप भारत के राष्ट्रीय गौरव के संरक्षक हैं और भारत की आशाओं और अभिलाषाओं के सजीव रूप हैं। इसलिए आप अपना व्यवहार ऐसा बनाइये कि आपके देशवासी आपको आशीर्वाद दें और भावी पीढियाँ आप पर गर्व करें।

हमारे दिमागों पर तनिक–सा भी संदेह नहीं है कि जब हम अपनी सेना के साथ भारतीय सीमाओं को पार करेंगे और अपने राष्ट्रीय ध्वज को भारत की धरती पर फहरायेंगे, देशभर में वास्तविक क्रांति फूट पड़ेगी–क्रांति जो अन्ततोगत्वा भारत से ब्रिटिश शासन को बाहर निकाल देगी।''

सुभाष बाबू ने समय–समय पर अपने विचार व्यक्त किये। राष्ट्रीय एकता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सुभाष बाबू ने कहा।

''स्वतंत्र हो जाने पर यदि हम एक राष्ट्र के रूप में संगठित होना चाहते हैं, तो यथार्थ में कठोर परिश्रम करना होगा। राष्ट्रीय एकता और संगठन को विकसित करने के लिए अनेक बातों की आवश्यकता है यथा – एक सामान्य भाषा, एक सामान्य वेशभूषा, एक सामान्य आहार इत्यादि। ... मेरे विचार से एकता की समस्या व्यापक रूप से एक मनोवैज्ञानिक समस्या है, लोगों को यह अनुभव कराने के लिए कि वे एक राष्ट्र के हैं, शिक्षित करना होगा और लोगों को अभ्यास कराना होगा।''

जनसंख्या वृद्धि पर चिन्ता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा ,

''स्वतंत्र भारत में लम्बी अवधि के कार्यक्रमों के सम्बन्धों में प्रथम समस्या, जिससे मुकाबला करना है, हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या है। मैं इस सैद्धान्तिक प्रश्न की ओर नहीं जाना चाहता कि भारत में जनसंख्या अधिक है अथवा नहीं। मैं तो मात्र यह संकेत करना चाहता हूँ कि जहाँ गरीबी, भूख, बिमारियाँ धरती को शिकार बना रही हैं, वहाँ हम एक दशाब्दी में 3 करोड़ जनसंख्या की वृद्धि को स्वीकार करने में समर्थ नहीं हैं।''

भारतीय नारी सामर्थ्य पर उन्होंने कहा ,

''मैं भारतीय नारी की सामर्थ्य से भली–भाँति परिचित हूँ। इसलिए मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसे हमारी नारियाँ नहीं कर सकती हों और कोई बलिदान अथवा कष्ट ऐसा नहीं है, जिसे वह सहन नहीं कर सके।

मैं वीर भारतीय नारियों की ऐसी टुकड़ी चाहता हूँ जो मृत्यु से जूझने वाली रेजीमेंट बनायें और जो उस तलवार को उठायें जो कि 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्रम में झाँसी की वीर रानी ने उठाई थी।

उन्होंने युवकों, विद्यार्थियों को जागृत करते हुए अपना संदेश दिया। विद्यार्थियों के लिए उन्होंने अपने संदेश में कहा,

''प्रत्येक छात्र के लिए एक शक्तिशाली और स्वस्थ शरीर, सुदृढ़ चरित्र और आवश्यक सूचनाओं एवं स्वस्थ गतिशील विचारों से परिपूर्ण मस्तिष्क अपेक्षित है। यदि अधिकारियों द्वारा किये गये प्रबन्ध,

स्वास्थ्य, चरित्र और बुद्धि के सही प्रस्फुटन में सहायक नहीं होते, तो आपको वे सुविधाएँ उपलब्ध करानी चाहिए जो इस प्रस्फुटन को सुनिश्चित कर सकें और यदि अधिकारी इस दिशा में आपके प्रयत्नों का स्वागत करें तो और भी अच्छी बात है किन्तु यदि वे इस ओर ध्यान नहीं देते तो उन्हें छोड़ दो और अपने रास्ते जाओ। आपका जीवन आपका अपना है और इसके विकास का उत्तरदायित्व दूसरों से ज्यादा आपके ऊपर है।

विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेने के लिए भी उन्होंने प्रेरित किया,

''मैं नहीं समझ पाता हूँ कि राजनीति में भाग लेने पर विशेष पाबंदी क्यों लगाई जाये जबकि सामान्य रूप से राष्ट्रकार्य में भाग लेने पर कोई पाबंदी नहीं लगाई जाती । सारे राष्ट्र कार्य पर पाबंदी की बात तो मेरी समझ में आती है, किन्तु मात्र राजनैतिक कार्य पर पांबदी निरर्थक है। एक पराधीन देश में, यदि समस्याएँ मूलतः राजनैतिक समस्याएं हैं तो सारे क्रियाकलाप भी वास्तव में राजनैतिक ही हैं। किसी भी स्वाधीन देश में राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है, क्योंकि विद्यार्थियों में से ही राजनैतिक, विचारक और राजनीतिज्ञ उत्पन्न होते हैं।''

जापान ने दूसरे विश्वयुद्ध में जब बर्मा पर आक्रमण किया और रंगून में भारतीयों को जेल में डाल दिया तब नेताजी ने जापान से समझौता किया। जापान ने जीते हुए दो द्वीप आजाद हिन्द सरकार को सौंप दिए आजाद हिन्द सेना की 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने विशाल परेड हुई जहाँ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा की।

24 अक्तूबर 1943 को नेताजी ने इंग्लैण्ड और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषण कर दी। लोगों ने हजारों की संख्या में रक्त के हस्ताक्षर कर प्रतिज्ञा पत्र पर नेताजी को भेंट किए। 7 जनवरी 1944 को आजाद हिन्द सरकार का कार्यालय सिंगापुर से रंगून पहुँच गया। यहीं पर नेताजी ने बहादुर शाह जफर की कब्र पर फूल चढ़ाए। 4 फरवरी 1944 को मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिन्द सेना ने कूच किया। आजाद हिन्द सेना कोहिमा पहुँच गई, सैनिकों ने मातृभूमि को जमीन पर लेट कर प्रणाम किया।

इसी बीच विश्वयुद्ध में जापान ने हथियार डाल दिये। तब सुभाष बाबू भी रंगून से बैंकाक चले गये। 18 अगस्त को एक वायुयान दुर्घटना में नेताजी का शरीर आग से झुलस गया बताते हैं। जापान रेडियो ने 23 अगस्त 1945 को यह शोक समाचार प्रसारित किया। सारे भारत में शोक की लहर दौड़ गयी। अपने महान नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस के प्रति सारा राष्ट्र कृतज्ञ है।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सुभाष बाबू का जन्म हुआ –

(अ) 23 जनवरी 1897 (ब) 30 मार्च 1926

(स) 2 अक्टूबर 1950 (द) 1 मई 1927 ( )

2. सुभाष बाबू की मातृभाषा थी –

(अ) हिन्दी (ब) अंग्रेजी

(स) बंगला (द) उर्दू ( )

3. मातृभूमि की सेवा का मंत्र सुभाष बाबू को किस से मिला –

(अ) गाँधी (ब) नेहरू

(स) तिलक (द) विवेकानन्द ( )

4. सुभाष बाबू आई.सी.एस. में कब चुने गये –

(अ) अगस्त 1940 (ब) सितम्बर 1920

(स) मई 1924 (द) मार्च 1945 ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सुभाष बाबू के माता–पिता के क्या नाम थे?
2. स्कूल के किस प्रधानाध्यापक ने उन्हें बहुत प्रभावित किया?
3. सुभाष बाबू के अनुसार अंग्रेज कौनसी भाषा समझते हैं?
4. सुभाष बाबू के त्यागपत्र का स्वागत किसने किया?
5. सैनिकों के लिए सुभाष बाबू ने कौनसे तीन आदर्श बताये?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सुभाष बाबू ने अपने परिवार का जिक्र करते हुए क्या बताया?
2. एंग्लो–इंडियन स्कूल का भारतीय बच्चों के प्रति क्या दृष्टिकोण था?
3. ''मेरे मन में दो प्रकार के संशय थे'' सुभाष बाबू के मन में कौनसे दो संशय थे?
4. कटक में आये संन्यासी ने कौनसी तीन बातें बताईं?
5. प्रेसीडेंसी कॉलेज से सुभाष बाबू को क्यों निकाला गया?

निबन्धात्मक प्रश्न

1. श्री अरविन्द के जिस भाषण ने सुभाष बाबू को प्रभावित किया उसे अपने शब्दों में लिखिए?
2. गुण्डे हैदर का हृदय परिर्वतन कैसे हुआ?
3. युवकों व विद्यार्थियों के लिए सुभाष बाबू ने क्या संदेश दिया?
4. आजाद हिन्द फौज के गठन व कार्यों के बारे में लिखिए?
5. सुभाष बाबू का भारतीय स्वाधीनता संग्राम आंदोलन में योगदान स्पष्ट कीजिए?